INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
( Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal )
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

# एनसीएफएसई 2023 और भारतीय ज्ञान परम्परा व प्रणाली: संभावनाएँ और चुनौतियाँ

## (NCFSE 2023 and Indian Knowledge Tradition and System: Prospects and Challenges)

**डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह**

एसोसिएट प्रोफेसर,

विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन्

अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश, भारत)

**DOI No.** 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/03.2025-52293182/IRJHIS2503026

***सारांश :***

*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCFSE) 2023 स्कूली शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को सम्मिलित करने पर बल देती है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक और वैज्ञानिक धरोहर से प्रेरित, IKS में आयुर्वेद, योग, वैदिक गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन और कला जैसी विधाएँ शामिल हैं। यह रूपरेखा पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक शिक्षा पद्धति सेजोड़ने का प्रयास करती है, जिससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गौरव, नैतिक मूल्यों और अंतःविषय दृष्टिकोण को विकसित किया जा सके।IKS का एकीकरण कई संभावनाएँ प्रस्तुत करता है जैसे कि स्वदेशी ज्ञान का पुनरुद्धार, नवाचार को बढ़ावा देना और विद्यार्थियों में सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करना। हालांकि, इसके समक्ष कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जैसे कि समावेशी पाठ्यक्रम का निर्माण, शिक्षकों को IKS के प्रभावी शिक्षण के लिए प्रशिक्षित करना, और पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित करते हुए समकालीन शैक्षिक मानकों के अनुरूप बनाना। यह शोधपत्र NCFSE 2023 के तहत IKS को स्कूली शिक्षा में एकीकृत करने से जुड़े अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण करता है। यह संभावित रणनीतियों पर भी चर्चाकरता है, जैसे कि गहन शोध, शिक्षक प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी का उपयोग, और क्षेत्र-विशिष्ट अनुकूलन। अंतत; यह अध्ययन दर्शाता है कि IKS का समावेश प्राचीन ज्ञान को आधुनिक कौशल के साथ एकीकृत कर शिक्षा की गुणवत्ता को उन्नत कर सकता है जिससे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और वैश्विक दृष्टिकोण रखने वाले नागरिक तैयार किए जा सकते हैं।*

***मुख्य विषय:*** *भारतीय ज्ञान प्रणाली, NCF 2023, एकीकरण, संभावनाएँ और चुनौतियाँ*

**परिचय :**

भारत को ज्ञान और बौद्धिक उपलब्धियों की समृद्ध परंपरा वाले राष्ट्र के रूप में विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है। हालांकि, ब्रिटिश शासन और उसकी नीतियों ने देश की शिक्षा प्रणाली पर प्रतिकूल प्रभाव डाला, जिससे इसकी पारंपरिक समृद्धि में गिरावट आई। हाल के वर्षों में, भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को पुनर्जीवित करने पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिससे भारत की प्राचीन परंपराओं और ज्ञान को फिर से मुख्यधारा की शिक्षा में स्थान देने का प्रयास किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति(NEP) के अंतर्गत, भारत अपनी शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपराओं को समाहित कर एक क्रांतिकारी बदलाव की ओर अग्रसर है। यह लेखIKS के महत्व और इसके परिवर्तनकारी प्रभावों की संभावनाओं का विश्लेषण करता है।

भारत के ऐतिहासिक विकास में इसका भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि दोनों प्रमुख कारक रहे हैं। प्राचीन काल में भारत ज्ञान और विद्या के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था, जहाँ दूर-दूर से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। भारतीय संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था ने विश्व स्तर पर एक अनूठी पहचान बनाई, जिसमें **"वसुधैव कुटुंबकम्"** की अवधारणा निहित थी।

भारत की समावेशी और विविधतापूर्ण संस्कृति ने इसे वैश्विक पटल पर एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। प्राचीन साहित्य, ज्ञान, और परंपराएँ इस सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग रही हैं। वैदिक साहित्य, जिसमें ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद शामिल हैं, भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। ये ग्रंथ दर्शन, विज्ञान, गणित, भाषा विज्ञान और खगोल विज्ञान सहित अनेक विषयों में अद्वितीय ज्ञान का भंडार हैं।

वैदिक साहित्य प्राचीन भारतीय ऋषियों की गहन अंतर्दृष्टि को दर्शाता है। इसमें दार्शनिक अवधारणाएँ, नैतिक शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान समाहित हैं, जिन्होंने सदियों तक भारतीय जीवनशैली को प्रभावित किया है। वेदों में उल्लेखित भजन, अनुष्ठान और सिद्धांतों ने साहित्य, कला, संगीत, वास्तुकला और शासन-व्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव डाला है।

❖ **ब्रिटिश शासन और भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव :**

भारत पर विभिन्न आक्रमणों का राजनीतिक प्रभाव तो पड़ा, लेकिन ब्रिटिश शासन ने देश की शिक्षा प्रणाली, संस्कृति और समाज पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव डाला। ब्रिटिश नीतियों का उद्देश्य भारतीयों को उनकी सांस्कृतिक और बौद्धिक जड़ों से अलग करना था, जिससे एक ऐसी मानसिकता विकसित हो जिसमें स्वदेशी ज्ञान को कमतर आँका जाए। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने पारंपरिक भारतीय शिक्षा पद्धति को प्रतिस्थापित कर दिया, जिससे आत्मनिर्भरता, स्वतंत्र चिंतन, रचनात्मकता और उद्यमशीलता की भावना कमजोर हो गई।
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी, भारत ने पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को अपनाए रखा, जिससे देश की शैक्षिक उन्नति बाधित हुई। इस परिवर्तन का प्रभाव भारत की वैश्विक अर्थव्यवस्था में हिस्सेदारी पर भी पड़ा, जिससे देश की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई।

- **बदलाव की आवश्यकता को समझना :**

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली को लेकर विद्वानों और विचारकों ने लंबे समय से विश्लेषण किया है और इसे देश की प्रगति में बाधा के रूप में देखा है। पश्चिमी शिक्षा पद्धति ने एक अधीनस्थ मानसिकता को बढ़ावा दिया, जिससे व्यक्तियों की मौलिक सोच और रचनात्मक क्षमता प्रभावित हुई। भारतीय ज्ञान परंपराओं की उपेक्षा ने उनके महत्व और उपयोगिता को कम कर दिया। हालांकि, हाल के दशकों में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को लेकर रुचि बढ़ी है, जिससे प्रमुख शिक्षाविद और वैज्ञानिक इसकी संभावनाओं को तलाशने के लिए प्रेरित हुए हैं। इस आवश्यकता को समझते हुए, भारत सरकार ने स्वदेशी ज्ञान के पुनरुत्थान को प्राथमिकता दी और इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के तहत सम्मिलित किया।

- **भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से शिक्षा में परिवर्तन :**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, भारतीय ज्ञान प्रणाली के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र में एक व्यापक बदलाव की कल्पना करती है। भारत में ज्ञान का अपार भंडार है, जिसमें से कई प्राचीन पांडुलिपियाँ अभी भी खोजे जाने की प्रतीक्षा में हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा, जिसमें 14 विद्याएँ और 64 कलाएँ शामिल हैं, दर्शन, व्यावहारिक शिक्षा, कला, शिल्प, कृषि, स्वास्थ्य और विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों को समाहित करती है। इन प्राचीन परंपराओं का अध्ययन, संरक्षण और समकालीन जीवन में समावेश किया जाएगा, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन संभव हो सकेगा।

- **भारत के भविष्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली की भूमिका :**

भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभावी क्रियान्वयन से न केवल शिक्षा प्रणाली में सुधार होगा, बल्कि भारतीय जीवनशैली और मानसिकता में भी सकारात्मक परिवर्तन आएगा। जब भारतीय दर्शन, ज्ञान, कला, शिल्प, कौशल और प्रबंधन को विभिन्न क्षेत्रों में लागू किया जाएगा, तब व्यापक स्तर पर सामाजिक और आर्थिक प्रगति होगी। आने वाले वर्षों में IKS से जुड़े क्षेत्रों में 50 लाख से अधिक रोजगार सृजित होने की संभावना है, जिससे भारत के आत्म-सम्मान और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को बल मिलेगा।

समकालीन समाज में IKS को सफलतापूर्वक एकीकृत करने के लिए विशेषज्ञों, शिक्षकों और विद्वानों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक होगी। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि प्राचीन ज्ञान को आधुनिक दृष्टिकोण के अनुरूप प्रस्तुत किया जाए,जिसमें भगवद गीता और अन्य शास्त्रों पर गहन शोध को शामिल किया जाए। यदि भारतीय ज्ञान परंपराओं का प्रभावी रूप से अध्ययन और प्रचार किया जाए, तो भारत अपने नागरिकों के साथ-साथ वैश्विक समुदाय के लिए भी महत्वपूर्ण ज्ञान संसाधन प्रदान कर सकता है। इस दिशा में **भीष्म स्कूल ऑफ इंडियन नॉलेज सिस्टम्स (BSIKS)** अपनी पाठ्यचर्या और संसाधनों के माध्यम से भारतीय ज्ञान को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

- **भारतीय ज्ञान प्रणाली के समक्ष चुनौतियाँ**

1. **पाठ्यक्रम निर्माण की जटिलता:**

   IKS को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ समाहित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसे वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से विकसित करना आवश्यक है।

2. **शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता:**

   अधिकांश शिक्षकों के पास IKS का व्यापक ज्ञान नहीं है। इसलिए, उन्हें विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से इसके शिक्षण में दक्ष बनाना आवश्यक होगा।

3. **सांस्कृतिक विविधता:**

   भारत की विविध भाषाएँ और संस्कृतियाँ IKS के समान रूप से क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं। इसे क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना आवश्यक होगा।

4. **वैधता और प्रामाणिकता:**

   आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी की कसौटी पर IKS को परखना और उसकी प्रामाणिकता स्थापित करना एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है।

- **समाधान और रणनीतियाँ**

1. **गहन शोध और प्रलेखन:**

   भारतीय ज्ञान प्रणाली के विभिन्न पहलुओं को संरक्षित करने और उनकी वैज्ञानिक मान्यता स्थापित करने के लिए विस्तृत शोध और दस्तावेजीकरण आवश्यक होगा।

2. **शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम:**

   शिक्षकों को IKS के सिद्धांतों और शिक्षण विधियों से परिचित कराने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना।

3. **प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग:**

   डिजिटल संसाधनों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और तकनीकी उपकरणों के माध्यम से IKS को अधिक आकर्षक और सुलभ बनाया जा सकता है।

4. **क्षेत्रीय अनुकूलन:**

   IKS के तत्वों को विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक और भाषाई आवश्यकताओं के अनुरूप समायोजित किया जाना चाहिए,जिससे यह अधिक प्रभावी हो सके।

5. **सार्वजनिक-निजी भागीदारी:**

   भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सरकार और निजी शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

- **एनसीएफ 2023 में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) की भूमिका**

  राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) 2023 भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाने पर बल देती है। इसके तहत:

- **प्राथमिक स्तर**पर कहानियों, लोककथाओं और स्थानीय ज्ञान को शामिल किया जाएगा, जिससे बच्चों में जिज्ञासा और सांस्कृतिक जुड़ाव विकसित किया जा सके।
- **माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर**पर योग, आयुर्वेद, भारतीय गणित और अन्य पारंपरिक विज्ञानों को पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाएगा।
- **स्नातक स्तर**पर IKS आधारित शोध और व्यावसायिक पाठ्यक्रम विकसित किए जाएँगे, जिससे पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया जा सके।

**राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 :**

NCF 2023 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप विकसित किया गया है और इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में नवाचार और सुधार को बढ़ावा देना है। यह कक्षा में व्यक्तिगत शिक्षण के महत्व पर जोर देते हुए छात्रों की समग्र शिक्षा को सुदृढ़ करने का प्रयास करता है।

NEP 2020, 21वीं सदी में भारत की पहली व्यापक शिक्षा नीति है, जिसका उद्देश्य देश की तेजी से बदलती आवश्यकताओं को पूरा करना है। इस नीति के तहत केंद्र सरकार ने हाल ही में NCF 2023 का मसौदा जारी किया है, जो आधुनिक शिक्षा को पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के मूल सिद्धांतों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने NEP 2020 को भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए एक **मार्गदर्शक सिद्धांत** बताया है, जो शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य शिक्षा के पारंपरिक स्वरूप के भीतर आधुनिक आवश्यकताओं को समहित करना है।

- **NCF 2023 की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता :**

NCF 2023, वर्तमान शिक्षा प्रणाली को आवश्यक दिशा-निर्देश और सिफारिशें प्रदान करता है। यह दस्तावेज़ छात्रों के लिए विभिन्न चरणों में आवश्यक सीखने के परिणामों को स्पष्ट करता है और शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने की दिशा में कार्य करता है।

**राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के प्रमुख शैक्षिक उद्देश्य :**

1. **समान और समावेशी शिक्षा का विकास**

- NCF 2023, शिक्षा में बाल-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाने पर बल देता है।
- यह रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है और समावेशी शिक्षा को प्राथमिकता देता है।
- शिक्षा प्रणाली को सभी छात्रों, विशेष रूप से वंचित वर्गों के लिए अधिक सुलभ और समावेशी बनाने का लक्ष्य रखता है।
- कक्षा में स्वतंत्रता, स्वीकृति, सहयोग और चुनौतीपूर्ण वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए।

2. **मानवीय क्षमताओं को सशक्त बनाना**

- यह शिक्षा प्रणाली में समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, विशेष रूप से विकलांग और हाशिए पर मौजूद समुदायों के बच्चों की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- यह मूल्यों, दृष्टिकोण और नैतिक शिक्षा को स्कूली शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर बल देता है।

3. **21 वीं सदी के कौशल विकसित करना**

- NCF 2023, छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने हेतु 21वीं सदी के आवश्यक कौशल जैसे आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान, संचार और सहयोग को विकसित करने पर जोर देता है।
- इसके अंतर्गत बहु-विषयक शिक्षा को अपनाया जाएगा, जिससे छात्रों को विभिन्न विषयों की समग्र समझ विकसित करने में सहायता मिलेगी।

4. **समग्र विकास को बढ़ावा देना**

- यह पाठ्यचर्या केवल शैक्षणिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों के**शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास**पर भी केंद्रित है।
- इसका उद्देश्य ऐसे समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करना है, जो समकालीन वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सक्षम हो।

5. **वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का समाधान**

➢ यह छात्रों को व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करता है, जिससे वे जमीनी स्तर पर समस्याओं को हल करने में सक्षम हो सकें।

➢ परियोजनाओं, फील्ड ट्रिप, प्रयोगों और अनुभवात्मक शिक्षण को पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया जाएगा।

➢ **पाठ्यक्रम और शैक्षणिक पुनर्गठन के विभिन्न चरण**

- **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा का उद्देश्य**

नई**राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) 2023**का लक्ष्य केवल रटने पर निर्भर रहने के बजाय छात्रों की वैचारिक समझ को मजबूत करना है। यह शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण और व्यावहारिक बनाने के लिए**दक्षताओं और मूल्यों**के विकास को बढ़ावा देता है। इनमें**आलोचनात्मक सोच, निर्णय लेने की क्षमता, रचनात्मकता**, और**नैतिक, सामाजिक एवं संवैधानिक मूल्यों**का समावेश किया गया है, जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके।

- **NCF 2023: नई स्कूली शिक्षा की संरचना**

NCF 2023 के तहत, पारंपरिक**10+2 संरचना**को**5+3+3+4 मॉडल**में परिवर्तित किया गया है। यह**छह आयामी शिक्षण और पांच आयामी नैतिक विकास**के दृष्टिकोण को अपनाता है। यह नई प्रणाली 3 से 18 वर्ष की आयु के शिक्षार्थियों के लिए**चार स्कूली चरणों**पर आधारित है, जो उनके आयु-विशेष के अनुसार सबसे उपयुक्त शिक्षण पद्धतियों को अपनाती है

- **आधारभूत चरण (3-8 वर्ष)** – प्रारंभिक शिक्षा, खेल और संवाद कौशल पर ध्यान
- **प्राथमिक चरण (8-11 वर्ष)** – भाषा, गणित और पर्यावरणीय अध्ययन का समावेश
- **मध्य चरण (11-14 वर्ष)** – विषयों की गहरी समझ और विश्लेषणात्मक सोच को प्रोत्साहन
- **माध्यमिक चरण (14-18 वर्ष)** – व्यापक विषय चयन और बहुविषयक अध्ययन की सुविधा

- **माध्यमिक शिक्षा के दो स्तर**

माध्यमिक चरण को दो भागों में विभाजित किया गया है:

- **कक्षा 9 और 10** – छात्रों को विषय चयन और लचीलेपन की सुविधा मिलेगी।
- **कक्षा 11 और 12** – वर्तमान पाठ्यक्रम संरचना के अनुरूप अध्ययन होगा।

इस नए मॉडल के तहत, माध्यमिक शिक्षा के चार वर्षों को**"बहु-विषयक अध्ययन के वर्ष"**के रूप में तैयार किया गया है। उद्देश्य है कि माध्यमिक स्तर पर छात्रों को एक अधिक**अनुकूलनीय और छात्र-केंद्रित पाठ्यक्रम**प्रदान किया जाए।

❖ **NCF 2023: कला शिक्षा और अंत:विषय शिक्षण पर ज़ोर**

NCF 2023 **समग्र, बहुविषयक और एकीकृत शिक्षा**को प्रोत्साहित करता है, जिससे छात्रों को विषयों के बीच आपसी संबंधों को समझने में सहायता मिलती है। यह पारंपरिक शिक्षण पद्धति, जहाँ विषयों को अलग-अलग पढ़ाया जाता है, को पीछे छोड़ते हुए**व्यावहारिक और वास्तविक जीवन से जुड़ी शिक्षा**की दिशा में कदम बढ़ाता है।

❖ **सामाजिक विज्ञान और गणित में बदलाव**

NCF 2023 में**विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल**को एकीकृत करने पर जोर दिया गया है, जिससे ज्ञान के सभी क्षेत्रों को जोड़कर**समग्र शिक्षा प्रणाली**विकसित की जा सके।

- **मध्य विद्यालय स्तर पर**, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के लिए अलग-अलग शिक्षण मानक होंगे।
- **पर्यावरणीय अवधारणाएँ**विज्ञान और सामाजिक विज्ञान दोनों में समाहित की जाएँगी।
- **वैज्ञानिक और सामाजिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण**के माध्यम से प्राकृतिक और मानव जीवन के बीच की परस्पर क्रिया को समझने की दिशा में प्रयास किया जाएगा।

**बोर्ड परीक्षाओं में बदलाव(कक्षा 10 और 12)**

कक्षा 10 और 12 की**बोर्ड परीक्षाओं**को संशोधित किया जाएगा ताकि रटने की प्रवृत्ति को कम किया जा सके औ**रसमझ, योग्यता और उपलब्धि**को प्राथमिकता दी जा सके।

- परीक्षाओं को**आसान और अधिक व्यावहारिक**बनाया जाएगा।
- प्रत्येक छात्र को**साल में कम से कम दो बार**बोर्ड परीक्षा देने का अवसर मिलेगा।
- **सबसे अच्छा स्कोर**अंतिम परिणाम के लिए लिया जाएगा, जिससे परीक्षा के तनाव को कम किया जा सके।
- बोर्ड परीक्षाएँ**"ऑन-डिमांड"**या**"सेमेस्टर-वार"**प्रारूप में संचालित की जा सकती हैं, जिससे छात्रों को अधिक लचीलापन मिलेगा।

❖ **NCF 2023 की संभावित चुनौतियाँ और सीमाएँ**

1. **शिक्षक प्रशिक्षण और आवश्यक संसाधन**

- NCF 2023 को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए एक मजबूत शैक्षिक ढाँचे और उच्च गुणवत्तावाले प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता है।
- शिक्षकों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करना प्राथमिकता होनी चाहिए, क्योंकि वे शैक्षिक सुधारों के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- शिक्षकों को न केवल सक्षम बनाया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें नई शिक्षण विधियों को अपनाने के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित भी किया जाना चाहिए।

2. **शिक्षक शिक्षा पर अस्पष्टता**

- NCF 2023 के दस्तावेज़ में उल्लेख किया गया है कि**प्री-सर्विस शिक्षक शिक्षा**इस पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होगी, जैसा कि NEP 2020 में उल्लेख किया गया है।
- हालाँकि, इससे जुड़े**राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-TE)**में इस विषय पर अधिक स्पष्ट विवरण दिए जाने की आवश्यकता है।

3. **नई नीतियों के प्रति प्रतिरोध**

- शैक्षिक सुधारों के कार्यान्वयन में एक आम चुनौती बदलाव के प्रति प्रतिरोध होती है।
- नए दृष्टिकोणों को अपनाने में आने वाली कठिनाइयाँ संभावित बाधाओं को जन्म दे सकती हैं जिससे NCF 2023 के लक्ष्यों को पूरी तरह से साकार करने में समय लग सकता है।

4. **समावेशी शिक्षा की सीमाएँ**

- हालाँकि यह दस्तावेज़ समावेशी शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार करता है, लेकिन विशेष शिक्षा के प्रावधानों को पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं करता है।
- इसमें केवल बुनियादी ढाँचे को समावेशी और सुरक्षित बनाने की आवश्यकता का उल्लेख किया गया है जबकि विशेष ज़रूरतों वाले

छात्रों के लिए विस्तृत रणनीतियों की कमी है।

❖ **NCF 2023 के कार्यान्वयन की समय-सीमा**

- संशोधित**NCF के आधार पर नई पाठ्यपुस्तकें 2024-25 शैक्षणिक सत्र**से लागू की जाएंगी।
- इसका अर्थ यह है कि उसी शैक्षणिक वर्ष से NCF में प्रस्तावित सुधारों को लागू करने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी।

❖ **मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव**

- NCF 2023 आकलन और मूल्यांकन की उनप्रक्रियाओं को बढ़ावा देता है जो**प्रामाणिक सीखने**को प्रोत्साहित करती हैं।
- यह पारंपरिक रटने पर आधारित शिक्षा और मानकीकृत परीक्षाओं की सीमाओं को स्वीकार करता है।
- शिक्षकों को छात्रों के सीखने का आकलन करने के लिए**परियोजनाओं, पोर्टफोलियो और वास्तविक जीवन से जुड़े अनुप्रयोगों**का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- इस नई मूल्यांकन प्रणाली का उद्देश्य छात्रों को अपनी समझ और कौशल को अधिक**व्यावहारिक और सार्थक तरीकों**से प्रदर्शित करने का अवसर देना है।

❖ **भारतीय ज्ञान प्रणाली: चुनौतियाँ और संभावनाएँ**

**मुख्य चुनौतियाँ**

**1. पाठ्यक्रम विकास और एकीकरण**

✅ **चुनौती:** भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को आधुनिक शिक्षा में समाहित करना एक जटिल कार्य है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि पाठ्यक्रम पारंपरिक और समकालीन ज्ञान के बीच संतुलन बनाए रखते हुए दोनों को प्रभावी रूप से जोड़े। इसके लिए आवश्यकहै कि पारंपरिक ज्ञान की मौलिकता संरक्षित रहे, जबकि इसे आधुनिक वैज्ञानिक विषयों के अनुरूप ढाला जाए।

✅ **समाधान:** इस चुनौती का समाधान गहन शोध और विशेषज्ञों की सहायता से किया जा सकता है। एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम विकसित किया जाना चाहिए, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान की समृद्धि को बनाए रखते हुए आधुनिक शिक्षा को और अधिक समृद्ध बनाए।

**2. शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षण क्षमता**

✅ **चुनौती:** IKS को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए शिक्षकों का उपयुक्त प्रशिक्षण आवश्यक है। वर्तमान में कई शिक्षकों के पास पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली की गहन समझ नहीं है। प्रशिक्षित शिक्षकों के बिना, इस प्रणाली का सफल कार्यान्वयन मुश्किल हो सकता है।

✅ **समाधान:**शिक्षकों को IKS की शिक्षण विधियों से परिचित कराने के लिए विशेष प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास कार्यक्रम लागू किए जाने चाहिए। इससे शिक्षक न केवल विषयवस्तु को बेहतर तरीके से समझ सकेंगे, बल्कि इसे छात्रों तक प्रभावी रूप से पहुँचा भी सकेंगे।

**3. वैज्ञानिक मान्यता और स्वीकृति**

✅ **चुनौती:**आयुर्वेद, वैदिक गणित, योग और पारंपरिक कला जैसे IKS के विभिन्न पहलू अक्सर वैज्ञानिक प्रमाणिकता के अभाव में संदेह के दायरे में आ जाते हैं। मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित ज्ञान को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे IKS की स्वीकृति

में बाधाएँ आ सकती हैं।

✔ **समाधान:** IKS के वैज्ञानिक आधार को प्रमाणित करने के लिए अनुसंधान को बढ़ावा देना आवश्यक है। आधुनिक वैज्ञानिक समुदायों और पारंपरिक ज्ञान विशेषज्ञों के बीच सहयोग स्थापित करके, दोनों के बीच की दूरी को कम किया जा सकता है।

**4. सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधता**

✔ **चुनौती:**भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को देखते हुए IKS को सभी क्षेत्रों में समान रूप से लागू करना कठिन हो सकता है। क्षेत्रीय प्रथाएँ और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ अलग-अलग होने के कारण, एकरूपता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

✔ **समाधान:** IKS को क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया जाना चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र की परंपराओं और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों को शामिल करके, इसे छात्रों के लिए अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बनाया जा सकता है।

**5. संसाधन और बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ**

✔ **चुनौती:** IKS को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए उचित संसाधनों, डिजिटल सुविधाओं और आधारभूत संरचना की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में, संसाधनों की कमी के कारण IKS का प्रभावी क्रियान्वयन एक बड़ी चुनौती हो सकती है।

✔ **समाधान:**सरकार और शैक्षणिक संस्थानों को डिजिटल उपकरणों और संसाधनों के विकास में निवेश करना चाहिए। IKS को सभी छात्रों तक पहुँचाने के लिए ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म, डिजिटल पुस्तकालय और इंटरैक्टिव पाठ्य सामग्री विकसित की जानी चाहिए, जिससे ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के छात्र भी लाभान्वित हो सकें।

**भारतीय ज्ञान प्रणाली: संभावनाएँ और अवसर:**

**1. पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण और पुनर्जीवन**

✔ **अवसर:**भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को पाठ्यक्रम में शामिल करने से पारंपरिक ज्ञान, जो पीढ़ियों से हस्तांतरित होता आ रहा है, को पुनर्जीवित और संरक्षित करने का अवसर मिलता है। यह छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का मौका देता है औरहमारी समृद्ध विरासत को संरक्षित करता है।

✔ **लाभ:**शिक्षा में IKS को सम्मिलित करने से छात्रों को अपनी संस्कृति और परंपराओं की गहरी समझ मिलती हैजिससे आत्म-सम्मान और राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा मिलता है।

**2. अंत:विषय शिक्षा को प्रोत्साहन**

✔ **अवसर:** IKS स्वभाव से अंत:विषय (Interdisciplinary) है, क्योंकि यह विज्ञान, गणित, दर्शन, कला और नैतिकता जैसे विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ता है। यह एकीकृत दृष्टिकोण छात्रों को ज्ञान के परस्पर संबंधों को समझने में मदद करता है।

✔ **लाभ:**यह शिक्षार्थियों में**आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान**कौशल विकसित करने में सहायक होता है, जिससे वे अधिक समग्र दृष्टिकोण के साथ सोचने और निर्णय लेने में सक्षम बनते हैं।

**3. नवाचार और स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा**

✔ **अवसर:** IKS के कई पहलू, जैसे**आयुर्वेद, पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ और प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग**, जलवायु

परिवर्तन, स्वास्थ्य और स्थिरता से जुड़ी समकालीन चुनौतियों के समाधान में मददकर सकते हैं।

✅ **लाभ:**छात्रों को पारंपरिक ज्ञान के आधार पर**नवाचार और स्थिरता**से जुड़ी तकनीकों को सीखने का अवसर मिलेगा, जिससे वे आधुनिक समस्याओं के लिए प्रभावी समाधान विकसित कर सकते हैं।

**4. नैतिकता और मूल्य-आधारित शिक्षा**

✅ **अवसर:** IKS का आधार सत्य (सत्य), अहिंसा (अहिंसा), और कर्तव्य (धर्म) जैसे नैतिक सिद्धांतों पर टिका हुआ है। इसे शिक्षा प्रणाली में शामिल करने से छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

✅ **लाभ:**इससे ऐसी पीढ़ी तैयार होगी जो न केवल शैक्षणिक रूप से सक्षम होगी बल्कि नैतिकता, सामाजिक ज़िम्मेदारी और करुणा जैसे गुणों से परिपूर्ण होगी। यह छात्रों को समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा।

**5. वैश्विक प्रासंगिकता और सांस्कृतिक समझ**

✅ **अवसर:**वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों की स्वीकार्यता बढ़ रही है। IKS को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने से भारतीय छात्र न केवल अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखेंगे, बल्कि वैश्विक स्तर पर संवाद करने और प्रतिस्पर्धा करने के लिए भी तैयार होंगे।

✅ **लाभ:**इससे विविध ज्ञान प्रणालियों और संस्कृतियों के प्रति**सम्मान और आपसी समझ**को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, यह वैश्विक मुद्दों जैसे नैतिकता, स्थिरता और मानव कल्याण पर व्यापक संवाद को सशक्त करेगा।

**निष्कर्ष :**

स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCFSE) 2023 के तहत भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को सम्मिलित करना**भारतीय शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता रखता है**। यह पहल प्राचीन ज्ञान को आधुनिक शिक्षाशास्त्र के साथ जोड़ने का प्रयास करती है, जिससे शिक्षा अधिक**समग्र, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और वैश्विक दृष्टिकोण से प्रासंगिक**बन सके। IKS छात्रों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने, नैतिक मूल्यों को अपनाने और अंतःविषय शिक्षा को समझने का अवसर प्रदान करता है। साथ ही, यह**योग, आयुर्वेद, वैदिक गणित और पारंपरिक कलाओं**जैसे क्षेत्रों में नवाचार, स्थिरता और प्रकृति के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देता है।

हालाँकि, इसके क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ भी हैं, जैसे:

- एक **संतुलित पाठ्यक्रम तैयार करना**,
- **विशेषज्ञ शिक्षकों को प्रशिक्षित करना**,
- **वैज्ञानिक प्रमाणिकता को स्थापित करना**, और
- इसे **भारत की विविध सांस्कृतिक और क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना**

इन चुनौतियों को दूर करने के लिए एक**व्यवस्थित और शोध-आधारित दृष्टिकोण** की आवश्यकता है, जिसमें **शिक्षक प्रशिक्षण, आधुनिक तकनीक का उपयोग और क्षेत्र-विशिष्ट अनुकूलन** शामिल हो।

अंततः, IKS का एकीकरण न केवल शिक्षा प्रणाली को समृद्ध बनाएगा, बल्कि यह एक ऐसी**पीढ़ी को तैयार करेगा जो ज्ञान,**

**सांस्कृतिक पहचान और नैतिकता के साथ वैश्विक स्तर पर सफलता प्राप्त कर सके**। इससे भारत की शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा मिलेगी, जो **आधुनिक आवश्यकताओं और पारंपरिक मूल्यों** के संतुलन पर आधारित होगी।

**संदर्भ :**


1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) (2023) *स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023: पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक विकास के लिए दिशानिर्देश*। एनसीईआरटी।
2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020) *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 202.1*। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
3. कुमार, वी., और शर्मा, पी. (2021) भारतीय ज्ञान प्रणाली: स्वदेशी ज्ञान को संरक्षित और पुनर्जीवित करना।*जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड प्रैक्टिस, 9*(2), 112–124.
4. तिवारी, एम., और अग्रवाल, आर. (2019). आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियों की भूमिका।*इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज, 18*(1), 30–40.
5. रेड्डी, एस. (2022). आधुनिक पाठ्यक्रम में पारंपरिक ज्ञान को शामिल करने की चुनौतियाँ. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल पॉलिसी, 41*(3), 56–68.
6. भट, आर., और सूद, ए. (2020). समकालीन शिक्षा प्रणालियों में प्राचीन ज्ञान को एकीकृत करना। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, 25*(4), 134–145.
7. शर्मा, ए., और गुप्ता, एस. (2020). आयुर्वेद और आधुनिक शिक्षा एकीकरण के लिए एक रूपरेखा। *जर्नल ऑफ अल्टरनेटिव मेडिसिन, 15*(2), 202–210.
8. सिंह, एन., और जोशी, आर. (2021). वैदिक गणित: शिक्षा में परंपरा और नवाचार को जोड़ना। *गणित शिक्षा अनुसंधान जर्नल, 23*(1), 88–99.
9. पटेल, एच., और देसाई, एम. (2018), भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित करना: शिक्षा में चुनौतियाँ और संभावनाएँ।*एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 16*(2), 45–59.
10. मुखर्जी, डी. (2020). भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ और वैश्विक शिक्षा: एक तुलनात्मक अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज, 29*(3), 134–145.
11. शर्मा, पी., और कपूर, वी. (2022) कक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियों को एकीकृत करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण। *शैक्षिक विकास जर्नल, 35*(1), 12–21
12. अय्यर, ए., और कुमार, के. (2021) भारतीय ज्ञान प्रणालियों के संदर्भ में पाठ्यक्रम विकास। *जर्नल ऑफ करिकुलम स्टडीज, 30*(4), 78–88
13. चौधरी, एस., और पांडे, ए. (2020), भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 16*(3), 210–220.
14. राजन, एस., और नाइक, पी. (2021), स्कूलों में भारतीय ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देने में डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका। *जर्नल ऑफ डिजिटल लर्निंग, 25*(2), 33–45.